BiharBoardBooks.Com
Download Bihar Board TextBooks

गोधूलि भाग 2 Class 10 Chapter 1 Question Answer PDF

इस सेक्शन में चैप्टर 1 में दिए गये सभी प्रश्नों का हल (उत्तर) दिया गया है |

प्रश्न 1: लेखक किस विडंबना की बात करते हैं? विडंबना का स्वरूप क्या है?

उत्तर: लेखक इस विडंबना की ओर संकेत करते हैं कि आधुनिक युग में भी जातिवाद के समर्थकों की कोई कमी नहीं है। जातिवाद के पोषक इसे समाज के लिए उपयोगी मानते हैं और इसका समर्थन करते हैं, जबकि यह सामाजिक भेदभाव और असमानता को जन्म देता है। विडंबना यह है कि जाति प्रथा को श्रम विभाजन के रूप में उचित ठहराने का प्रयास किया जाता है, जबकि यह न केवल श्रमिकों को अस्वाभाविक रूप से विभाजित करती है, बल्कि उनमें ऊँच-नीच का भेद भी स्थापित करती है।

प्रश्न 2: जातिवाद के पोषक उसके पक्ष में क्या तर्क देते हैं?

उत्तर: जातिवाद के पोषक इसके समर्थन में निम्नलिखित तर्क प्रस्तुत करते हैं:

i. वे कहते हैं कि आधुनिक समाज में कार्य कुशलता के लिए श्रम विभाजन आवश्यक है और जाति प्रथा भी इसी का एक रूप है।
ii. उनका मानना है कि जाति प्रथा एक व्यवस्थित सामाजिक संरचना प्रदान करती है, जिसमें हर व्यक्ति का एक निश्चित कार्य निर्धारित होता है।
iii. उनका तर्क है कि जाति प्रथा के कारण समाज में स्थिरता बनी रहती है और इससे कार्यों का सुचारू रूप से संचालन संभव होता है।

प्रश्न 3: जातिवाद के पक्ष में दिए गए तर्कों पर लेखक की प्रमुख आपत्तियाँ क्या हैं?

उत्तर: लेखक जातिवाद के समर्थन में दिए गए तर्कों पर निम्नलिखित आपत्तियाँ उठाते हैं:

i. जाति प्रथा केवल श्रम विभाजन नहीं है, बल्कि यह श्रमिक विभाजन भी करती है, जिससे समाज में असमानता उत्पन्न होती है।

ii. यह व्यक्ति की रुचि और क्षमता को महत्व नहीं देती, बल्कि जन्म के आधार पर उसका पेशा तय कर देती है।
iii. जाति प्रथा एक कठोर व्यवस्था है, जो व्यक्ति को जीवनभर एक ही कार्य करने के लिए बाध्य कर देती है, भले ही वह उसमें निपुण हो या नहीं।
iv. यह सामाजिक गतिशीलता को रोकती है और व्यक्ति को अपने इच्छित कार्य क्षेत्र में जाने से वंचित कर देती है।

प्रश्न 4: जाति भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप क्यों नहीं कही जा सकती?

उत्तर: जाति प्रथा को भारतीय समाज में श्रम विभाजन का स्वाभाविक रूप नहीं कहा जा सकता क्योंकि:

i. यह व्यक्ति की स्वाभाविक रुचि और योग्यता के आधार पर नहीं, बल्कि जन्म के आधार पर श्रम का निर्धारण करती है।
ii. यह पेशे के चुनाव की स्वतंत्रता नहीं देती, जिससे व्यक्ति अपनी क्षमता के अनुसार कार्य नहीं कर सकता।
iii. इसमें ऊँच-नीच का भाव निहित है, जिससे समाज में भेदभाव और असमानता बढ़ती है।
iv. यह व्यक्तिगत विकास और कार्य-कुशलता को बाधित करती है, जिससे समाज की प्रगति धीमी हो जाती है।

प्रश्न 5: जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण कैसे बनी हुई है?

उत्तर: जाति प्रथा भारत में बेरोजगारी का एक प्रमुख और प्रत्यक्ष कारण इसलिए बनी हुई है क्योंकि:

i. यह व्यक्ति को केवल उसके पारंपरिक पेशे तक सीमित रखती है, जिससे वह नए अवसरों का लाभ नहीं उठा पाता।
ii. उद्योग और तकनीकी क्षेत्रों में लगातार बदलाव होते रहते हैं, लेकिन जाति प्रथा के कारण लोग अपने पारंपरिक व्यवसाय से हटकर अन्य कार्य नहीं कर सकते।
iii. अगर किसी व्यक्ति का पारंपरिक व्यवसाय समाप्त हो जाता है, तो उसके पास कोई दूसरा विकल्प नहीं रहता और वह बेरोजगारी का शिकार हो जाता है।
iv. व्यक्ति की योग्यता और क्षमता के बावजूद उसे केवल जन्म के आधार पर कार्य करने की बाध्यता होती है, जिससे उसकी प्रतिभा का पूर्ण उपयोग नहीं हो पाता।

प्रश्न 6: लेखक आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या किसे मानते हैं और क्यों?

उत्तर: लेखक के अनुसार, आज के उद्योगों में गरीबी और उत्पीड़न से भी बड़ी समस्या यह है कि लोग अपने कार्य में रुचि नहीं लेते और विवशतावश कार्य करते हैं। जाति प्रथा के कारण मनुष्य का कार्य

पहले से तय कर दिया जाता है, जिससे वह मनमर्जी का पेशा नहीं अपना सकता। यह स्थिति न केवल श्रमिकों की कार्य कुशलता को प्रभावित करती है, बल्कि आर्थिक विकास में भी बाधा उत्पन्न करती है।

प्रश्न 7: लेखक ने पाठ में किन प्रमुख पहलुओं से जाति प्रथा को एक हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया है?

उत्तर: लेखक ने जाति प्रथा को निम्नलिखित प्रमुख पहलुओं से हानिकारक बताया है:

i. यह जन्म के आधार पर श्रमिकों का विभाजन करती है, जिससे सामाजिक असमानता उत्पन्न होती है।
ii. यह व्यक्ति की स्वतंत्रता छीन लेती है और उसे जीवनभर एक ही कार्य में बाँध देती है।
iii. यह आर्थिक प्रगति में बाधा उत्पन्न करती है, क्योंकि यह व्यक्ति की कार्य-कुशलता और योग्यता को विकसित नहीं होने देती।
iv. यह बेरोजगारी को बढ़ावा देती है, क्योंकि पेशे के परिवर्तन की अनुमति नहीं देती।

प्रश्न 8: सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए निम्नलिखित विशेषताएँ आवश्यक हैं:

i. लोकतंत्र केवल शासन की एक पद्धति नहीं, बल्कि समाज के सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान का माध्यम होना चाहिए।
ii. सामाजिक जीवन में अबाध संपर्क के पर्याप्त अवसर उपलब्ध होने चाहिए, ताकि समाज में भ्रातृत्व की भावना विकसित हो सके।
iii. हर व्यक्ति को स्वतंत्रता, समता और बंधुत्व का अधिकार मिलना चाहिए, ताकि समाज में समानता बनी रहे।
iv. लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक को अपने साथियों के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रखना चाहिए।

📢 **यह फ़ाइल BiharBoardBooks.Com द्वारा बनाई गई है!**

📚 **BiharBoardBooks.Com पर आपको बिहार बोर्ड (BSEB) की कक्षा 1 से 12 तक की सभी पुस्तकें, नोट्स और सॉल्यूशंस मुफ्त में उपलब्ध हैं। यह वेबसाइट परीक्षा की तैयारी के लिए एक उपयोगी संसाधन है, जहाँ से आप सटीक और सरल अध्ययन सामग्री प्राप्त कर सकते हैं।**

💡 **अधिक अध्ययन सामग्री और नोट्स के लिए BiharBoardBooks.Com विज़िट करें!** 🚀